महान आदेश

पूरा करने में

आप

कैसे मदत कर सकते हैं।

लोगों को मसीह के लिये **जीतें**

लोगों को मसीह में लिये **बनायें**

लोगों को मसीह के लिये **भेंजे**

हर कदम पर मार्गदर्शक

प्रस्तावना

मसीह के साथ मेरा संबंध वर्ष 1956 के माह सितंबर में जब मै 20 वर्ष का हुआ शूरू हुआ तब मैने अपना दिल और जीवन उसको अपना प्रभु मानकर सौंप दिया और मैं अद्भूत रीति से बदल गया। तब से ये मेरा आदर और सौभाग्य हो गया कि मै विश्वसनीयता से उससे प्रेम करूं और दूसरों को भी प्रशिक्षण दूँ कि वे अपने जीवन में उसके पीछे चलते हुये उन्नति करें।

इन बहुत से वर्षो में मैंने एक संक्षिप्त, साधारण और उपयोग हेतू आसान सुसमाचारीय एंवम चेला बनाने योग्य ऐसी सामुग्री का अभाव देखा। परिणाम स्वरूप मैने यह मसीह केंद्रित, बाइबल आधारित व्यव्हारिक एंवम हस्तातंर योग्य सामुग्री का निमार्ण किया जिसे मैने और बहुतों ने सफलता पूर्वक उपयोग किया।

जबकि बहुत सी उत्तम पुस्तकें और सामुग्री इस विस्तृत विषय पर लिखी गई है, मै एक ऐसा कुछ बनाना चाहता था जो संक्षिप्त, समझने में आसान और उपयोग हो ।

आशा है कि यह सामुग्री जिसे मै "**पावर पॅक**" कहता हूँ आपको और दूसरों को तैयार करने के लिये मदत करेगी कि परमेश्वर का वह महान आदेश "जाकर सारे जाति के लोगों को चेला बनाओ …….. जो बातें मैने तुम्हे आज्ञा दी है उन्हे मानना सिखाओ" पूरी की जा सके। (मत्ती 28: 19-20)

हमारा अद्भूत परमेश्वर तुम्हे आशीष दे और अपनी महिमा के लिये आपका उपयोग करे क्योंकि आप यीशु मसीह के लिये दूसरों को जीतने, तैयार करने और भेजें जाने के लिये मदत करते है।

पावर पॅक की अधिक प्रतियों को कैसे प्राप्त करें।

1. आप नीचे लिखे गये पते पर से अतिरिक्त प्रतियों को खरीद सकते है। फिर भी कृपा कर पुस्तक की सामुग्री में किसी भी प्रकार का बदल ना करे।
2. कॉपीयर मशीन से इसकी अतिरिक्त प्रतियो को बनाने में अपने आप को स्वतत्रं समझे। पूर्ण पुस्तक या इसके किसी विषेश पृष्ठों को आप पुनः कापी कर सकते है।
3. आप इन्हे हमारे वेबसाइट से डाउनलोड कर प्रिन्ट भी सकते है।

अतिरिक्त प्रतियों के लिये कृपया संपर्क करेः

Wayne Shuart -3017 E- Stella Lane – Phoenix, AZ 85016

Wayne@PowerPackInfo.com

www.PowerPackInfo.com

© 2006 Shuart Development Company

विषय सूची

पवित्र आत्मा	1
यीशु मसीह के लिये गवाही देना	2 - 3
सफलतापूर्वक गवाही देना	4
आपकी व्यक्तिगत गवाही को कैसे तैयार व प्रस्तूत करे	5
गवाही प्रश्नावली.....	6
निशाना साधना	7
सुसमाचारीय पारगमन	8 - 9
चेला बनाना	10 - 11
आत्मिक उन्नति की “4 बातें”	12
परमेश्वर के वचन को प्रभावी रूप से कैसे सिखाये.....	13-14
छोटे समूह का प्रशिक्षण	15-16
अपनी बाइबल का अध्ययन कैसे करें	17 - 19

पवित्र आत्मा

मसीहियों के लिये इससे बढ़कर विस्तृत और महत्वपूर्ण विषय नही कि वे परमेश्वर की पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व और सेवा के विषय में सीखे और समझे। जब हम उस के जीवन और हमारे जीवन में उसकी सामर्थ का अनुभव करते है, हम मसीह के प्रेम और जीवन को दूसरो पर परावर्तित करेगें और अलौकिक रूप से परमेश्वर के महान आदेश के लिये तैयार करेगें।

1. वह कौन है? वह परमेश्वर है और त्रिएक में से एक है (मत्ती 28: 19-20)।
2. वह एक व्यक्ति है (यूहन्ना 16: 13)।
3. वह संसार (अन्यजातियों) को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय मे निरूत्तर करेगा (यूहन्ना 16: 8)।
4. वह मसीह के विषय गवाही देगा (कहेगा) (यूहन्ना 15: 26)।
5. वह सब सच्चाई में हमारा मार्गदर्शन करेगा (यूहन्ना 16: 13)।
6. जब एक व्यक्ति का नया जन्म होता है वह नये जन्म को उत्पन्न करता है। (यूहन्ना 3: 5-6)
7. वह प्रत्येक मसीही विश्वासी के भीतर रहता है। (1 कुरन्थियों 6: 19-20)
8. वह परमेश्वर के आत्मिक वरदानों का उगम् है। (1कुरन्थियों 12:1-11) (रोमियों 12: 6-8)
9. वह परमेश्वर के फलों (चरित्र गुणों) का उगम् है। (गलतियों 5: 22-23)
10. वह हमें मसीह के लिये गवाह होने के लिये सामर्थ देता है। (प्रेरितो 1: 8)
11. परमेश्वर हमें उसकी पवित्र आत्मा से भर जाने (नियंत्रित होने) की आज्ञा देता है। (इफिसियों 5: 18)

मसीह के लिये गवाही देना

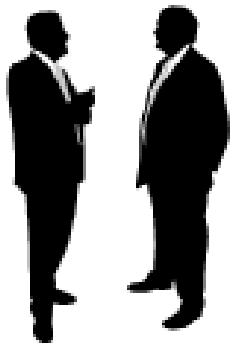

आप प्रभु यीशु मसीह के लिये एक अच्छे गवाह बन कर दूसरों को उसके लिये जीत सकते है। आपको इस महान कार्य में मदत करने और प्रोत्साहित करने और यीशु मसीह के लिये प्रभावशाली गवाह बनने और दूसरों को जीतने के महान कार्य में मदत करने के लिये निम्नलिखित सुझाव तैयार किये गये है।

1. पहला, आपको अपने उध्दार के विषय में आश्वस्त होना चाहिये। परमेश्वर चाहता है कि आप यह जाने कि आपके पास अनंत जीवन है। (1 यूहन्ना 5: 13)

2. वास्तव में प्रभावी होने के लिये आपने पूर्ण रीति से अपना जीवन यीशु मसीह को देना और पवित्र आत्मा और उसकी सामर्थ से भर जाना चाहिये । आत्मा से भरने का उद्देश्य यह है कि आप सामर्थ प्राप्त करे और परमेश्वर के गवाह होने की इच्छा को प्राप्त करे। (प्रेरितो के काम 1: 8, 4: 31, 9: 17, 20)

3. "सफलता पूर्वक गवाही देना" इसे सीखे और लागू करें। पवित्र आत्मा की सामर्थ में यीशु मसीह के विषय में बताने की शुरूवात करें और परिणामों को परमेश्वर पर छोड़ दें।

4. परमेश्वर के वचन के "प्रारंभिक ज्ञान" को अध्ययन के द्वारा बढ़ाये। अपने दिलों में परमेश्वर के वचनों को छिपा कर रखें ताकि पवित्र आत्मा इसका प्रयोग किसी को यीशु के पास लाने के लिये कर सके। (2 तीमुथियुस 2: 15)

5. आप अच्छे पारगमन को सीखकर उपयोग करे यह आपको शारीरिकता से आत्मिकता की ओर ले जायेगा। व्यक्तिगत गवाही दूसरों को बताये कि आपने यीशु मसीह को कैसे प्राप्त किया और उसका आपके लिये क्या अर्थ है। किसी अच्छे वचन आधारित लेखों का उपयोग करे जैसे कि "क्या आप परमेश्वर को प्रत्यक्ष रूप में जानना चाहते हो।"

6. यीशु मसीह को प्रस्तूत करने के लिये एक साधारण रूपरेखा वाली उध्दार योजना का अनुसरण करे।

   अ) परमेश्वर आपसे प्यार करते है और आपको बनाया है कि आप उसे व्यक्तिगत रूप से जानें। (यूहन्ना 3: 16, यूहन्ना 17: 3)

   ब) लोग पापमय होने के कारण परमेश्वर से अलग किये गये है। इसीलिये हम परमेश्वर को व्यक्तिगत रीति से नही जान सकते और ना ही उसके प्रेम का अनुभव कर सकते है। (रोमियो 3: 23, रोमियो 6: 23)

क) पाप से मुक्ति के लिये **सिर्फ** यीशु मसीह ही परमेश्वर का उपाय है। केवल उसी के द्वारा हम परमेश्वर को व्यक्तिगत रीति से जान सकते और उसके प्रेम का अनुभव कर सकते है। (रोमियो 5: 8, यूहन्ना 14: 6)

ड) हमें यीशु मसीह को व्यक्तिगत रीति से प्रभु स्वीकार करना चाहिये तब हम परमेश्वर को व्यक्तिगत रीति से जान सकते और उसके प्रेम का अनुभव कर सकते है। (यूहन्ना 1:12 इफिसियों 2: 8-9, प्रकाशितवाक्य 3: 20)

7. जीजस फिल्म का उपयोग करें अपने घर में किसी गैर–मसीही को अपने साथ फिल्म देखने के लिये आमंत्रित करें या उसे उस फिल्म को देखकर वापस करने के लिये दिजीये।

8. यदि वह व्यक्ति जिसको आप बता रहे है यीशु मसीह को स्वीकार करता है, उसे तुरंत किसी को अपने इस निर्णय के विषय में बताने के लिये प्रोत्साहित करें। (लूका 8: 39) और अपनी चेला बनाने की पहली सभा का समय तय करें।

9. हमेशा परमेश्वर के वचन पर आधारित और साफ साफ बोलें, अपने विचारों से ना बोलें। मुस्कुराते और उत्साहपूर्ण बने रहें। जब उस व्यक्ति का नाम लेते है नजरों से सपंर्क बनाये।

10. दूसरे व्यक्ति और उसकी आवश्यकताओं की प्रति रूचि रखे। कोमलता और मित्रतापूर्ण बने रहें।

11. इन **सबसे उपर** यीशु मसीह को प्राथमिकता दे। अपनी गवाही को उस पर केन्द्रित रखें। चर्च, संस्था या धर्म केंद्रित बातचीत ना करें।

12. निम्नलिखीत से बचें।

अ) वादविवाद और टीका टिपण्णीया ।

ब) 'मै आपसे पवित्र हूँ' यह धारणा।

क) बहुत अधिक बात करना। आप उनकी आवश्यकताओं को मालूम नही कर सकेंगे यदि आप लगातार बोलेंगे।

ड) निर्णयों को जबरदस्ती लादना। कोमल बने रहे। प्रश्न पूछे पर दबाव ना बनायें। (2 तीमुथियुस 2: 23-25)

13. यीशु मसीह की गवाही देने में बहुत से फायदे है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि इससे परमेश्वर को महिमा मिलती है। जो यीशु मसीह को नही जानते ऐसे हर प्रकार और विभिन्न परिवेशों के लोगों के पास पहुँचने में यह सहायता करती है। यह आपको बहुतायत से मसीही सेवायें हर समय और हर स्थान पर प्रदान करने के लिये अवसर प्रदान करती ओर आपकी आत्मिक जीवन को और गहरा बनाती है।

सफल गवाही देना यह है

“यीशु मसीह
के विषय,
पवित्र आत्मा
की सामर्थ में बताना
आरंभ करना
और परिणामों को
परमेश्वर पर
छोड़ देना।”

अपनी गवाही कैसे तैयार व प्रस्तूत करे

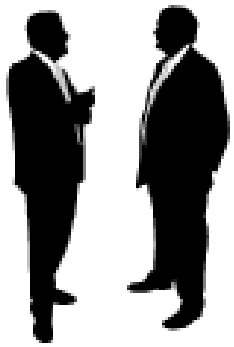

आपकी व्यक्तिगत गवाही या मसीह के साथ आपके संबंधो की कहानी किसी व्यक्ति या किसी समूह के सामने प्रस्तूत करने में आपकी मदत करने के लिये निम्नलिखीत सुझाव क्रमबंध्द किये जा रहे है। इनका पालन करके आप दूसरों को यह प्रभावी रूप से बता सकेंगे कि मसीह ने आपके लिये क्या किया।

1. पवित्र आत्मा से कहे कि उन शब्दो को जो आप दूसरो से बोलेगें सामर्थ और आशीष प्रदान करें कि उससे मसीह को महिमा मिले और सुनने वालो के लिये प्रोत्साहन एवंम आव्हान हो। (प्रेरितों के काम 1: 8)

2. आपके उध्दार की व्यक्तिगत गवाही इस सरल रूपरेखा के आसपास बनाई जाये। (1) मसीह को प्राप्त करने से **पहले** आपका जीवन कैसा था। (2) मसीह का स्वीकार **कैसे** हुआ। (3) मसीह को प्राप्त करने **के बाद** आपका जीवन किस प्रकार का है। (प्रेरितों के काम 26: 1-23, 22:1-21) रूपरेखा आपको गवाही शुरू करने और समाप्त करने के लिये स्थान देती है।

3. मसीह को प्राथमिकता दें। इस बात पर जोर दे कि उध्दार उसको प्राप्त करने के बाद आता है। ध्यान रखें कि कुछ गैर–मसीही लोग आपकी गवाही से यह समझ सके कि मसीह को स्वीकार कैसे किया जाता है। (लूका 8: 38-39)

4. साधारण तरीके से आपकी गवाही 4-5 मिनिट लम्बी हो। 4-5 मिनिट की तैयारी होने के कारण आपको यह सहायता मिलेगी कि आप अपनी गवाही को आपके पास उपलब्ध समय के अनुसार बढ़ा और घटा सकेगें।

5. **गवाही** मसीह ने आपके लिये क्या किया, या मसीह का आपके जीवन में क्या अर्थ है यह बताती है । यह समय आपके प्रचार करने का नही है। यह आपको अद्भूत अवसर प्रदान करता है कि आप यीशु मसीह के बारे में अपनी व्यक्तिगत गवाही के रूप में **बताते** हुये अपने आप को लोगों पर प्रगट करें।

6. गवाही को परमेश्वर के दो या तीन वचनों के आस पास तैयार करें। इस बात से आश्वस्त रहे कि आप अच्छी शुरूवात ओर अच्छा **समापन** करें। यह आपकी गवाही में रूचि और समरसता बनाये रखेगा।

7. सभी सुन सके इतनी उंची आवाज में बोले । हर प्रकार से उत्साहित बने रहें। सबसे उपर मसीह होना ही उत्साहित करने वाली बात है।

8. वास्तविकता में रहें। मसीह हमारे जीवन की समस्याओं और कष्टों को ही दूर नही करता परंतु वह हमारे जीवन को उद्देश्य ओर दिशा प्रदान करता है जिससे हमें हर वस्तु शांती और निश्चितता से प्राप्त हो जाये। (याकूब 1: 2-4, रोमियों 5: 3-4)

9. इन बातों से बचने का ख्याल रखें।
   अ) "प्रचार" जैसी गवाही। स्वाभाविक बने रहें। लोगों को यह ना बताये की उन्हे क्या करना चाहिये।
   ब) धर्म, चर्च या फिरका (डिनामिनेशन) बातचीत के दौरान सकारात्मक या नकारात्मर रूप में लाना।
   क) बैठने का घटिया तरीका या हताश होना। आराम से बैठे परतुं दर्शनीय बने रहे। पवित्र आत्मा से निडरता मांगे। (प्रेरितों के काम 4: 31)
   ड) "हालेलूयाह, बचाया गया या आमीन इत्यादी शब्दो से"

10. अंत में, अपनी गवाही को हमेशा और जितने लोगों से आप बता सकते है बतायें। यह आपके मसीही जीवन को मजबूत करेगा और दूसरों के पास मसीह के लिये पहूँचने में सहायता करेगा।

गवाही प्रश्नावली

1. मै यीशु मसीह को प्राप्त करने से **पहले** क्या था।

2. मैने यीशु को **कैसे** प्राप्त किया।

3. यीशु मसीह को प्राप्त करने के **बाद** परमेश्वर ने मुझमें क्या बदलाव किया।

4. बाइबल से उपयुक्त वचन।

निशाना साधना

1 यीशु ने कहा "सारे जगत में जाकर" ....." (मरकूस 16: 15 और "जाओ और चेला बनाओ ..... (मत्ती 28 : 19)

2 मेरा "संसार" कहाँ है ?

- मेरा घर / परिवार
- मेरे पड़ोसी
- मेरा कार्यालय/कार्य का स्थान
- मेरे मित्र
- मेरा स्कूल
- मेरा गोल्फ / टेनिस क्लब
- मेरा मनपंसद रेस्टारेन्ट
- मेरा नाई/मेकअप मॅन
- मेरा जिम / खेलकूद क्लब
- सामान्यतः वह स्थान जहां मै रहता, कार्य करता और खेलता हूँ।

3 यदि मुझे मछलियॉ पकड़ना है तो मुझे वहां जाना चाहिये जहां मछलियॉ है।

4 यदि मुझे लोगों को पकड़ना है तो मुझे वहां जाना चाहिये जहां लोग है।

5 वह कौन से तरीके और गतिविधियॉ है जिनसे हम लोगों को निशाना बना सकते है।

- मित्रता बनाये
- नाश्ते और दोपहर के भोजन पर आमंत्रित करे
- शाम के भोजन पर पत्नी सहित आमंत्रित करे
- खेलकूद गतिविधीयों का आयोजन करे
- व्यक्तिगत नोट एंवम पत्र भेजें
- सुसमाचारीय कार्यो पर आमंत्रित करे
- घर/कार्यालय/अस्पताल/जेल में व्यक्तिगत मुलाकात करे
- उन्हें "जीजस" फिल्म दे और देखकर वापस करने को कहे।

6 ऐसे तीन लोगों के नाम लिखें जिनके लिये आप प्रार्थना शुरू कर सकते है और यीशु मसीह के विषय में बताने और चेला बनाने के लिये उपलब्ध हो सकते है।

क) _____

ख) _____

ग) _____

सुसमाचारीय पारगमन

1 आज मसीही अपनी गवाही दूसरों को नही बताते है क्यों वे नही जानते कि अपनी बातचीत कैसे शुरू करे।

2. परमेश्वर का वचन हमें तैयार रहने को कहता है। 1 पतरस 3: 15 - "हमेशा तैयार रहे....."
2 तिमुथियुस 4: 2 - तैयार रहें. . . . ."
2 तिमुथियुस 2:15 - तत्पर रहें. . . . ."

3. स्वाभाविक से आत्मिक स्वरूप में पहुचाया जाना ही सुसमाचीय पारगमन है।

4. पारगमन के दो प्रकार है।

अ) हम अपने आत्मिक कानों को **दूसरो की टिपण्णीयों** और प्रश्नों के लिये खोलकर रखते है। (1 पतरस 3: 15)

ब) हम अपने वार्तालाप का **आंरभ** प्रभावपूर्ण कथन या प्रश्न से करते है। उदाहरण- घ्यान दे, यीशु ने ध्यान आकर्षित करने के लिये "जीवन के जल" शब्द का उपयोग किया।

नोट : ध्यान दें, दूसरो को बताने के लिये हमेशा अपने साथ सुसमाचार की पुस्तक रखें।

5. आइये हम कुछ सुसमाचारीय पारगमन के उदाहरणो को देखें जो **दूसरो द्वारा** पूछे जाने वाले टिपण्णीयों और प्रश्नो का **उत्तर देने में** सहायक होगें। (आपका प्रत्युत्तर नीचे मोटे अक्षरों में छपा है)

- आप कैसे है? **92% आशीषित, प्रोत्साहित।**
- आप क्या करते है? **मै एक राजदूत हूँ। मै एक मछुआरा हूँ।**
- और क्या नया है। **बहूत से अच्छी बातें** …….. **नया जन्म** …….. **मेरे पास नया जीवन है।**
- उपर क्या है। **उपर स्वर्ग है जहॉ एक दिन मै जाने वाला हूँ।**
- आप हमेशा खुश और सहज दिखाई देते हो। **मै ऐसा हूँ क्यों कि मेरे पास एक गुप्त बात और एक विषेश व्यक्ति है।**
- मै अभी अभी अपने मित्र का अतिंम संस्कार करके आया हूँ। **अतिंम संस्कार बहुत से लोगों को दुखित करता है लेकिन मेरे जीवन में कुछ साल पहले में ऐसा हुआ जिससे अब मै दुखित नही होता।**
- मै _____ वर्षो से विवाहित हूँ। **यह बहुत अच्छा है! विवाह यह दूसरा निकटम संबंध है जो हम रख सकते है।**
- हमारा संसार बहुत बिगड गया है। (या कोई नकारात्मक विचार)। **हॉ, सच में, लेकिन कुछ साल पहले मेरे जीवन में ऐसा हुआ जिसने मुझे भविष्य का सामना करने के लिये सुरक्षा दी।**
- आज कुछ भी बिना मूल्य नही है। हॉ सच में! **लेकिन सबसे बड़ा वरदान इस संसार में बिना मूल्य है** …… **जो बाइबल में मिलता है। (रोमियो** 6: 23)

- आज का दिन मेरे लिये अच्छा है। **बहुत अच्छा। पर मेरे लिये हर एक दिन बहुत अच्छा होता है क्यों कि मै एक गुप्त बात और एक विषेश व्यक्ति को जानता हूँ।**
- आज का दिन निराशाजनक दिन है। **मेरे पास एक विषेश गुप्त बात है जो मुझे ऐसे दिनों में मदत करती है।**
- **यह पानी गर्म है। हॉ यह है, परतू यह बात जानकर कि मुझे स्वर्ग जाना है मुझे आनंदित करती है**

6. **मै** अपने वार्तालाप को एक **रूचिपूर्ण या मनमोहक प्रश्न से आरंभ करता हूँ:**

- जब मैने अपनी पत्नी को मुझसे विवाह करने के लिये कहा, वह मेरे जीवन का **दूसरा** महत्वपूर्ण निर्णय था।
- ..... वर्ष पहले मैने अपने जीवन का **सबसे महत्वपूर्ण** संशोधन/ निर्णय लिया।
- ..... **वर्ष पहले मै मृत्यू से भयभीत होता था पर फिर कुछ ऐसा हुआ जिसने इस भय को दूर कर दिया।**
- **मै इसे सौभाग्यपूर्ण समझता हूँ कि मैने सच्ची सफलता/ महत्व को खोज लिया।**
- आपके जीवन में **सबसे महत्वपूर्ण** क्या है?
- आपके जीवन का **सर्वप्रथम उदिष्ट (टारगेट)** क्या है?
- आप इस समय कौन सा **सबसे बड़ा आव्हान** का सामना कर रहें है?
- आपके जीवन में सर्वाधिक कौनसी महत्वपूर्ण चीज घटित हो रही है?
- इस जीवन के आपके **आत्मिक सफर में** आप कहॉ है?
- क्या मै आपके साथ **कुछ अच्छी बात कर** सकता हूँ?
- क्या आपने कभी **चार आत्मिक नियमों** के बारे में सुना है?
- अगर कोई आपसे यह पूछे कि **मसीही होने का अर्थ क्या है** तब आप क्या जवाब देंगे?
- आपके मतानुसार **एक व्यक्ति मसीही केसे बनता है?**
- **अगर आप परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जान सकते** तो क्या आप इसमें रूचि रखना पंसद करोगें?
- यदि आपसे कोई यह पूछे कि **मै परमेश्वर को किस तरह प्राप्त कर सकता (जान सकता) हूँ,** आप उनको क्या बतायेगें?
- **यदि स्वर्ग सचमुच मे है** तो क्या मरने के बाद आप वहॉ जाना चाहेगें? क्या आप जानना चाहेंगें वहॉ कैसे जा सकते है?
- यदि आज रात्री में आपको मरना और परमेश्वर के सामने खड़े होना पड़े और वह आपसे यह पूछे कि मै **आपको स्वर्ग में क्यों जाने दूँ,** तो आप क्या कहेंगे?
- एक स्केलपट्ट पर जिसमें 1 - 10 तक निशान अंकित हो (10 अर्थात 100%) आप **पापक्षमा** प्राप्ती के और **अनंत कालीन जीवन के आश्वासन** के मामले में अपने आपको कहॉ रखेंगे? क्या आप पूर्ण 10 पर होना चाहेगें?
- क्या आप यह सोचते है कि लोग जैसा **आत्मिक नेतृत्व** करना चाहिये वैसा कर रहे है?

चेला बनाना

यीशु मसीह ने कहा ‘‘जाओ और सारी जातियों के लोगों को **चेला** (एक वयस्क और अनुशासित मसीही) बनाओं और जो बातें मैने तुम्हे आज्ञा दी है मानना सिखाओ। (मत्ती 28: 19-20)

आपको इस आज्ञा की पूर्ति में सहायता के लिये निम्नलिखीत सुझाव तैयार किये गये है।

1. अपने आप (समय, गुणों और भडांरो) को परमेश्वर के लिये **उपलब्ध** करें। (रोमियों 12: 1-2)

2. परमेश्वर के पवित्र आत्मा को अनुमति दे कि वह आपके जीवन को **भरें व नियंत्रित** करे। (प्रेरितों के काम 1: 8, इफिसियों 5: 18)

3. अपने आप को परमेश्वर के वचनों मे **तैयार करें।** (2 तीमुथियुस 2: 15, 3: 16-17)

4. अपने शिष्य के साथ **आंरभ** में एक सभा रखें जिसमें जरूरी **समर्पण,** सामुग्री की आवश्यकता पर पुनःविचार, किसी शांत स्थान और मिलने के समय पर चर्चा की जाये। सप्ताह में एक दिन लगभग 1 ½ घंटा यह साधारणतः आदर्श समय होता है।

5. अपनी चेला बनाने की पहली सभा में चेला बनने के दो उद्देश्यों की चर्चा करें। उन्हे इन वचनो के साथ मुखाग्र करने के लिये कहें।

   अ) आत्मिक उन्नती और **वयस्कता** (कुलुस्सियों 2: 6-7)
   ब) आत्मिक **गुणन** (वृध्दि) (2 तीमुथियुस 2: 2)

6. अपने चर्चा और संगति के समय में मसीह को प्राथमिकता देने के लिये **हमेशा** याद रखें।

7. दूसरों के जीवन में **शामिल** होने के लिये इच्छुक और उपलब्ध रहें। (1 थिसलुनीकियों 2 : 7-12 ; कुलुस्सियों 1: 28-29)

8. जिन लोगों को आप चेला बना रहे है उनसे **वास्तविक मित्रता** बढाये (फोन, भोजन पर आमत्रंण, सहभागिता, कार्यक्रम, गुण आदि) याद रहें विषय से संबंध ज्यादा जरूरी है।

9. इस बात का ध्यान रहे कि उनके पास आधुनिक अनुवाद का नया नियम या बाइबल रहें। उन्हे प्रोत्साहित करें कि वे यूहन्ना का सुसमाचार **पहले पढ़ें** ।

10. उन्हे जीवन निमार्ण के **बुनियाद** के चारों भागों का अध्ययन या कोई भी बाइबल अध्ययन मार्गदर्शिका से पढ़ायें।

11. **अनंत जीवन की आशा** और मसीह के साथ व्यक्तिगत संबंध की समीक्षा करायें। (1 यूहन्ना 5: 11-13, यूहन्ना 1: 12)

12. आत्मिक उन्नति के चारों भागों की समीक्षा करें और सारे चक्र को वचन के साथ याद करवायें। (अगला पृष्ठ देखें)

    अ) मै **प्रार्थना और आराधना** के साथ परमेश्वर से बातें करता हूँ। (फिलिप्पियों 4: 6-7, इब्रानियों 13: 15)
    ब) परमेश्वर मुझसे अपने **वचनो** के द्वारा बात करता है। (1 पतरस 2: 2 ; 2 तिमोथियों 2: 15)
    क) मै अन्य मसीहो से **संगति** के द्वारा बात करता हूँ। (1 यूहन्ना 1: 3, इब्रानियों 10: 24, 25)
    ड) मै गैर–मसीहो से **गवाही** के द्वारा बात करता हूँ। (प्रेरितो 1: 8, इब्रानियों 28: 19-20)

13. किसी भी एक "**तय की हुई**" जीवन को बनाने वाली अध्ययन मार्गदर्शिका, "**सच्चा विश्वास**" और दूसरी बाइबल मार्गदर्शिका से पढायें।

14. उन्हे कोई भी दूसरा मसीह केन्द्रित अध्ययन सामुग्री दें। (बाइबल अध्ययन मार्गदर्शिक, किताबें, विडियो टेप, सीडी)।

15. परमेश्वर के वचन को **याद** करने के लिये प्रोत्साहित करें। (भजन सहिंता 119 : 9-11)

16. उनके **साथ उनके लिये** पवित्र आत्मा के द्वारा भरने और आधीनता के लिये प्रार्थना करें, उनके पारिवारिक आवश्यकता, काम, सेवकाई, फाइनेन्स आदि।

17. दूसरों को **मसीह के बारे में बताने** के लिये प्रोत्साहित करे। (लूका 8: 39)
    अ) उन्हे अपनी व्यक्तिगत गवाही को तैयार करना व बताना सिखायें। (पृष्ठ संख्या 5 और 6 पर दी गई गवाही प्रश्नावली का उपयोग करें।)
    ब) उन्हें चार आत्मिक नियमों या दूसरी सुसमाचार किताब को बताना सिखायें।
    क) उन्हें **इस** चेला बनाने के अध्ययन पुस्तिका को दूसरों को बताना सिखाओ।

18. उन्हे चर्च, बाइबल अध्ययन समूह, या संगति मे **लेकर आयें।**

19. हो सके तो उन्हे दूसरी अर्तराष्ट्रीय या सेवकाई के साथ आने में मदत करें।

20. अंत में विभिन्न विषयों पर जैसे पती पत्नी के संबंध, बच्चों को बढ़ाना, आज्ञाकारिता, फाईनेन्स, उत्तम चरित्र के विषय में लगातार संगति दे।

आत्मिक उन्नति की “4 बातें”

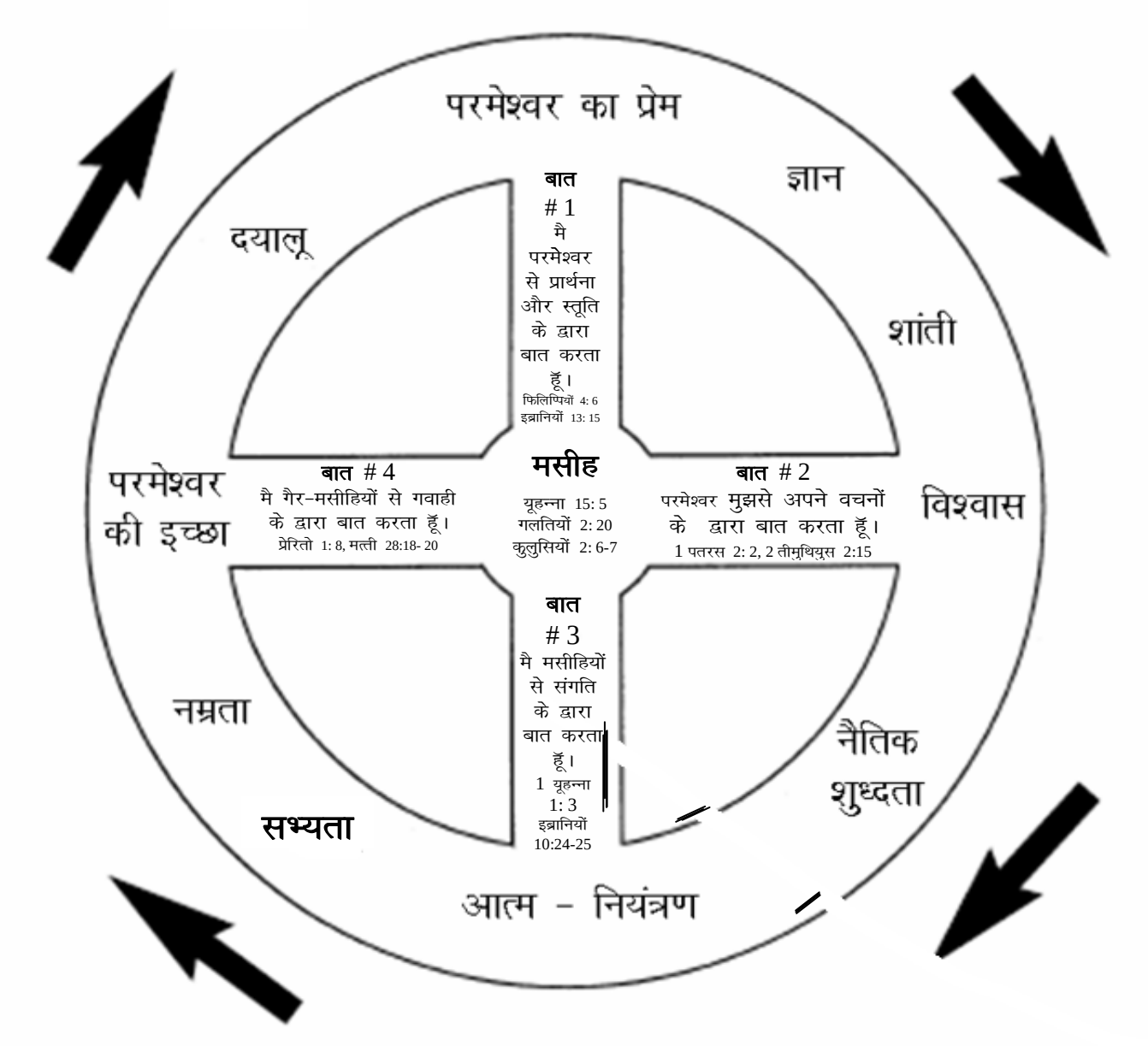

परमेश्वर के वचन को प्रभावी रूप से कैसे सिखाये

1. अपने आप को परमेश्वर के लिये **उपलब्ध** करें और कहें कि वह आपको अपनी पवित्र आत्मा से भरे और नियंत्रित करें। (रोमियों 12: 1, इफिसियों 5: 18)

2. अपने सुनने वालों के लिये और परमेश्वर के निर्देशन के लिय प्रार्थना करें जिससे आपको यह समझने में सहायता मिले कि उनकी आवश्यकता **क्या** है और आत्मिक रूप से वे **कहाँ** है। आप उस समूह के लोंगो के विषय यह भी जानना चाहेगें कि उनकी आत्मिक वयस्कता क्या है। अपने आप से पूछें कि यदि मेरी शिक्षा 100% प्रभावपूर्ण है तो मै क्या चाहूगां कि मेरे श्रोता **करें सोचें** या **अनुभव** करें।

3. यह सुनिश्चित करें कि आपको कितना समय दिया जायेगा और कम से कम "2 का 1" समय प्रार्थनामय तैयारी के लिये व्यतित करें। उदाहरण – दो घंटों की तैयारी एक घटां शिक्षा देने के लिये।

4. तैयारी करें ।

    अ) आप जिस विषय पर बोलने वाले है, उस विषय से विषेश रूप से जुडे हुये **संबंधित बाइबल वचन।**

    ब) **दिखाई देने वाले** अच्छे **साहित्य** जो आपके विषयों को स्पष्ट करते है। पावॅर पॉइन्ट, चार्टस्, ओव्हर हेड प्रोजेक्टर और शारीरिक उदाहरण। (स्मरण रहे एक चित्र हजार शब्द कहता है।)

    क) प्रत्येक व्यक्ति के लिये आर्कषक कार्य पृष्ठों जिसमें वे **मुख्य वाक्यों** को और **मुख्य विषयों** को लिखें। आप उत्तर बताने से पहले अपने सुनने वालों को अनुमति दे कि वे अपने लिये उस प्रमुख सच्चाई को ढूंढ कर

निकालें जो आप उन को सीखा रहे है। जहाँ तक संभव हो, उन्हे 2-3 के समूह में इस कार्य के लिये विभाजित करें।

ड) अपने प्रमुख बातों को स्पष्ट करने के लिये अच्छी **कहानियाँ** । स्मरण रखें मसीह ने हमेशा अपनी शिक्षाओं को स्पष्ट करने के लिये कहानियाँ बताई। लोगों को कहानियाँ प्रिय लगती है।

उ) आपके श्रोताओं के लिये आपकी शिक्षा से संबंधित **क्रिया का कदम** जिसे आने वाले दो या तीन दिनों में पूरा होना है। स्मरण रखें लोग जो सुनते है उसका 80 प्रतिशत भाग 24 घंटो के भीतर और 20 प्रतिशत बचे हुये 10 दिनों में भूल जाते है **जब तक वे उसे अपने जीवन मे लागू ना कर लें।**

5. अगर समूह छोटा हो, जब आप पढ़ाते है प्रत्येक के नाम सीखकर उन्हे नाम से पुकारे, अगर समूह बड़ा हो तो नाम पट्ट का उपयोग करें यदि संभव हो।

6. अपने सिर को उंचा रखे और श्रोताओं से नजरों से संबध बनाये रखें।

7. अपने श्रोताओं के जितना नजदीक जा सकते है जायें। पुलपिट के स्थान पर लेकटम का प्रयोग करें।

8. जब आप सीखा रहे हो तो प्रेम, लगन और उत्साह को दिखाये।

9. योग्य व पसंद आने वाले वस्त्रों को धारण करें। मसीह के लिये हमेशा अपने आप को अच्छा दिखाये। जो भी करें **उत्कृष्टा** से करें। (1कुरन्थियों 10: 31)

छोटे समूह का प्रशिक्षण

1) <u>कैसे शुरू करें</u>:

क) प्रार्थना सहित मसीही साथी का चुनाव करें (अविश्वासी का नही) जो इच्छुक हो।

ख) अधिकतम 12 व्यक्तियों तक समूह को सीमित करें। आप चाहें तो अपने समूह में सभी पुरूष, सभी स्त्रीयॉं या जोड़ें (पती पत्नि) रखें।

ग) स्थान के लिये किसी भी घर और एक निश्चित समय का चुनाव करें। सप्ताह में एक या माह में दो दिन, करीब 2 घंटे उचित होगें।

घ) जिस घर में प्रशिक्षण होगा उसी घर के लोग समूह की अगुवाई करने और खाने पीने का प्रबंध करें।

2) **कुछ मूल सिंध्दात :**

क) मसीह को प्राथमिकता दें।

ख) बाइबल हमारी अध्ययन पुस्तिका है। ऐसे अध्याय को चुनें जो अर्थपूर्ण और जीवन में उपयोगी हो। (क्रमसंख्या 4 देखें)

ग) अगुवा, चर्चा पर हावी ना हो, लेकिन एक दूसरे को सहभागी होने के लिये उत्साहित करें। सभा "चलने" में मदत करें। लेकिन योग्य व्यवस्था रखें।

घ) विषय-चर्चा के लिये अगुवा पूरी तरह से तैयार रहे।

ड) चर्चा के समय व्यक्तियों के नाम लें।

च) समूह की आवश्यकता के लिये पवित्र आत्मा के प्रति गंभीर रहे। एक दूसरे से प्रेम करना सीखें। इमानदार और खुले मन के रहे। एक दूसरे की आवश्यकता के लिये तत्पर रहे। (प्रार्थना, सलाह, साहित्य, अवसर प्रदान करना इत्यादि) ।

छ) वार्तालाप तथा एक दूसरे के लिये प्रार्थना करने के लिये प्रोत्साहित करें।

ज) सभी बातों में संतुलन बनाये रखें। जैसेः आराधना, गीत, परमेश्वर के वचन का अध्ययन अपने जीवन को बॉंटना, संगति, सलाह की आवश्यकता, प्रार्थना सेवा।

3) **चर्चा को प्रोत्साहित करने के लिये सुझाव:**

क) चर्चा के लिये समूह को बाइबल भाग पढ़ने को कहें।

ख) अध्याय पर थोड़ा समय शांतीपूर्वक मनन करने के लिये दे।

ग) दो या तीन के समूह में बाइबल भाग के अर्थ और विषय, विशेष शब्द, मूल विचार आदि पर चर्चा करने दे।

घ) ऐसे विशेष विचार को पूछे जो उन्हे प्रश्न करने के लिये उत्साहित करें :

1. इस वचन या शब्द से आप क्या समझते है?
2. कौन सी विषेश बात परमेश्वर हमें बताना चाहता है ?
3. आप किस तरह इस स्वभाव, बर्ताव या भावना से संबंध रखते है?
4. इस क्षेत्र को आपने किस रूप में (विषेश) अनुभव किया?
5. इस क्षेत्र मे आपको क्या (विषेश) मदत मिली? (उदाहरण दें)
6. कौन से मार्ग है जिनमें मैं इस सत्य को प्रभावशाली रूप से अपने जीवन में लागू कर सकता हूँ?
7. वे कौन सी रूकावटें है जो मैने इस क्षेत्र में अनुभव किया और विजयी होने के लिये क्या किया?
8. बाइबल के वे कौन से दृष्टांत है जो इन्ही विचारों को बताते है?
9. इस वचन या अध्याय में आप क्या नहीं समझ पाये?

4. **कुछ सुझाये गये बाइबल भाग :**

क) इफिसियों 4: 1-3

ख) रोमियों 12: 9-17

ब) इफिसियों 4: 24-32

घ) इब्रानियों 10: 23-25

त) इफिसियों 5: 1-11

छ) 2 पतरस 1: 3-8

ज) 1 थिस्सलुनीकियों 5: 14-23

झ) 1 पतरस 5: 1-9

ट) कुलुसियों 3: 12-17

ठ) 2 कुरन्थियों 6: 4-7

ड) फिलिप्पियों 4: 4-8

ढ) फिलिप्पियों 2: 2-11

अपनी बाइबल का अध्ययन कैसे करे

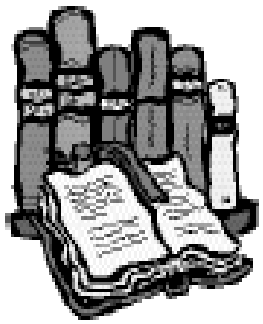

नियमित रूप से बाइबल अध्ययन के द्वारा परमेश्वर के बहूमुल्य वचनों की समझ और ज्ञान प्राप्त करने के लिये निम्नलिखित सुझाव दिये जा रहे हैं।

1. **आपने परमेश्वर के वचन का अध्ययन क्यों करना चाहिये।**

   अ) यह आत्मिक रीति से बढने में आपकी मदत करेगा। (1 पतरस 2: 2)

   ब) यह आपको मसीह की सेवा के लिये तैयार करेगा। (2 तीमुथियुस 3: 16-17)

   क) यह आपके विश्वास को बढ़ायेगा। (रोमियो 10: 17)

   ड) यह आपको बतायेगा कि आप परमेश्वर को कैसे प्रसन्न कर सकते है। (1थिस्सलुनीकियों 4: 1-2)

2. **अध्ययन के लिये व्यवहारिक मदत और साधन**

   अ) अध्ययन के लिये आवश्यक साधन

      1. अच्छी आधुनिक अनुवाद वाली बाइबल (न्यू इन्टरनेशनल वर्शन, न्यू अमेरिकन स्टेंडर्ड इत्यादि)
      2. एक नोटबुक, फाईन बालपेन, और महत्वपूर्ण वचनो को अडंरलाईन करने के लिये स्केलपट्टी।
      3. बाइबल कान्करडेन्स (स्ट्रांगस या यंगस्)

   ब) अध्ययन के लिये उपयोगी "साधन"

      1. नावे की टॉपिकल बाइबल
      2. बाइबल के कुछ और अनुवाद जैसे फिलिप्पस, वुयुस्ट का नया नियम, विस्तारित नया नियम आदि।
      3. बाइबल शब्दकोष
      4. ग्रीक - इग्लिश लेक्सिकॉन

3. **सफल अध्ययन के लिये कुंजीयॉं**

   क) परमेश्वर के वचन को जानने के लिये आपका नम्र निश्चय। (प्रेरितो 17: 11)

   ख) पवित्र आत्मा के मार्ग दर्शन के लिये प्रार्थना करें। (यूहन्ना 16: 13)

   ग) उसके वचनों को केवल पढ़ें नही परतुं अध्ययन करे। (२ तिमोथियुस 2: 15)

   घ) मुख्य वचनों को मुखाग्र कर ले। (भजन सहिता 119: 11)

   च) अध्ययन के लिये समय निश्चित करे।

   छ) जो आपने सीखा है उसका पालन करें। (याकूब 1: 22)

   ज) यह महसूस करे कि बाइबल की मुख्य बात यीशु मसीह और उद्देश्य छुटकारा तथा परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करना है। (यूहन्ना 20: 31)

4. **अनुवाद के कुछ नियम**

क) वचन का अनुवाद हमेशा उसी **सदंर्भ** में करे जिसमे वह लिखे गये है। जिस भाग का आप अध्ययन कर रहे है उसके **पहले** और **बाद** के कुछ वचनों को पढ़ें।

ख) सदंर्भित वचन या भाग की तुलना उसी के समान अन्य वचनों से करें। एक ही विषय पर अनेंक वचन हमारी अनुवाद की समझ और योग्यता को मजबूत करते है।

ग) यह तय करें वचन किन परिस्थितियों मे **किसे** लिखे या कहे गये है।

घ) ईश्वरीय व्यवस्था के सिध्दांत के साथ परिचत रहिये। (ईश्वरीय व्यवस्था वह अवस्था है जिसमें परमेश्वर मनुष्य को एक विषेश अवस्था में रखता है जो दूसरो से अलग होती है) । (यूहन्ना 1: 17)

च) बाइबल पाठ के सबसे स्पष्ट और सबूतमय भाग को प्राथमिकता दे।

छ) सभी अनुवाद अगर उन्हे सच और वास्तविक साबित होना है तो मूल भाषाओं में पाये जाने चाहिये।

ज) नये नियम को पुराने नियम के अनुवाद और पुराने नियम को नये नियम के अनुवाद की मदत के लिये लगातार खोजना चाहिये।

5. **बाइबल अध्ययन का तरीका :**

अ) टॉपीकल (विषय) आधारित अध्ययन

अपनी रूचि के अनुसार बाइबल में से विषयों को एकत्रित करें जैसे उध्दार, पवित्रआत्मा, धर्मी ठहराया जाना अनंतकालीक सुरक्षा आदि।

ब) स्वरूपीय अध्ययन

स्वरूपीय अध्ययन करें । (स्वरूप बाइबल की आत्मिक सच्चाईयों का नियुक्त किया हुआ उदाहरण है) जैसे आदम - मसीह का स्वरूप (रोमियों 5: 14) मलिकिसिदक - मसीह का स्वरूप (इब्रानियों 5: 6) आदि।

क) चारित्रीय अध्ययन

बाइबल के ऐसे चरित्रों को ढूढ़ कर अध्ययन करें और यह देखें किस प्रकार परमेश्वर ने उनके साथ व्यव्हार किया। उनका जीवन, स्वभाव, विजय और उनके पाप आदि।

ड) शब्द पर अध्ययन

बाइबल के उन बड़े शब्दों का अध्ययन करें और उनका सही और मूल अर्थ अलग अलग अनुवादों सें, शब्दकोष से ढूढंकर निकाले जो आत्मा सच में बताना चाहता है।

घ) पुस्तकीय अध्ययन

एक एक कर बाइबल की सभी पुस्तकों का अध्ययन करें। पढ़ते समय अपने आप से पुछें "इसका क्या मतलब है" और "मै इसे कैसे अपने जीवन में लागू कर सकता हूँ" ?

6. अपनी बाइबल में कैसे चिन्ह लगायें।

व्यवस्थित रूप से अपनी बाइबल में चिन्ह लगाना और टिपण्णीयॉ लिखना, सफलता पूर्वक बाइबल सीखनें की कुर्जी है।

अ) बहुत साफ तरीके से अपने पेन से बाइबल के महत्वपूर्ण भागों को रेखांकित करें।

ब) अलग अलग रंग वाले पेन का प्रयोग अलग अलग विषयों को दर्शाने के लिये उपयोग करें जैसे हरा पेन–आत्मिक उन्नति के लिये, लाल पेन – मसीह की मृत्यू के लिये आदि।

क) विषयों को दर्शाने के लिये वचने के बाद अलग अलग अक्षरों को उपयोग करें जैसे '**उ**' उध्दार के लिये, 'स्व' स्वर्ग के लिये।

ड) पृष्ठों के छोड़े हुये खाली स्थानों में नोट लिखें जैसे मूल अर्थ, बाइबल भाग जो आपने खोज निकाला है और आपके लिये सहायक हो।

ज) जिस वचनों का अपने अध्ययन किया है, उन वचनों की स्वयं की वचन श्रृखंला बनाने का प्रयत्न करें। जो अगला वचन पढ़ना है और जो पिछला वचन आपने पढ़ा है उसे वचन के पहले और बाद में श्रृखंला में लिख लें। इस प्रकार किसी भी वचन को श्रृखंला में पढ़ते समय आप कोई भी वचन किसी भी दिशा में कार्य करते हुये पढ़ सकते हैं।